# पवित्र बलिदान

# प्रारंभिक गीत

(खुले तौर पर पवित्र बलिदान के शुरू होने के पहले निम्नलिखित गीत गायें)

प्रभुवर सुनकर उत्तर तो दो (2)
आज हमारा नम्र निवेदन,
हारून का सा धूप सुगंधित,
स्वीकारा था तुमने अर्पित,
निनुवावालों जैसी बिनती,
जलनिधि में योना पर तेरी,
करूणा-वर्षा पडी अपार,
बरसे करूणा हम दासों पर,
बिनती है यह प्रभु करूणाकर। (2)

प्रभुवर सुनकर विनय हमारी (2)
उत्तर देना तुम करूणा कर (2)
नाम तुम्हारा करने पावन,
सुरभिल धूप जले सुख कारक,
होवे द्रवित तुम्हारा अन्तर,
सब पर बरसें करूणा अविरत, (2)
विनय हमारी यही निरंतर। (2)

हे करूणामय! हे जन-रक्षक! (2)
विजय तुम्हारी करूणा की हो, (2)
तवदान भरा है अग-जग में।
अहा! कितना भरा अग-जग में, (2)
निनुवे की सुन करूणा क्रन्दन (2)
तुमने अपना क्रोध मिटाया। (2)

अंगीकार करो करूणा-निधि (2)
धूप हमारे द्वारा अर्पित (2)
स्वीकारे तुमने थे पहले
हारून व ज़करयाह के धूप (2)
फिनहास बचा मौत के मुंह से (2)
यह तो तेरी करूणा का फल (2)

स्वयं-प्रभा से दीप्त महा प्रभु (2)
ज्योति देखते तव ज्योति से, (2)
परमपिता की किरण है न तू
अखिल सृष्टि को करता जग-मग, (2)
कर तू किरण! हमें प्रकाशित। (2)

ज्योतिर्मय जग के हैं वासी, (2)
पावन पुण्य गुणों से पूरित, (2)
निर्मल करना हम सब के मन,
रहकर दूर कुविचारों से हम, (2)
सत्कर्मों का मार्ग गहे हम। (2)

हाबिल का वह बलि-पशु मेमना,
नूह की वह निराली भेंट, (2)
अब्रहाम की बलि, ये चीजें,
प्रभुवर, तुमने की थी स्वीकार, (2)
व्रत एवं बिनती स्वीकार कर,
पालो पोसो हम दासों को। (2)

आओ पापी-जन! तुम सत्वर (2)
क्षमा मांग लो किये पाप पर, (2)
जरा खटखटाओं तो प्रभुवर,
खोलेंगें वे अपना द्वार,
जो मांगेगा पावन मन से,
देता उसको प्रभुवर दानी,
जो भी ढूँढता निर्मल मन से,
पाता है वह बिन देरी के।

स्मरण करो प्रभु! उन मृतकों को, (2)
जिन्होने था खाया तव तन, (2)
और पिया था शोणित पावन,
जब तुम आओ महिमान्वित हो, (2)
खडे दाहिनी ओर सभी हों। (2)

# खुली सेवा विधि

## पहला भाग

पुरोहित : तुझे मरियम ने जन्म दिया
युहन्ना ने दिया बपतिस्मा
हम सब के हित वे ही करेंगें।
तुझ से अनुनय-युत विनती।

## कीर्तन

मंडली : हे राजा एवं प्रभु हमारे !
स्वर्गिक पिता के एकलौते सुत !
वचन रूपी, हमारे प्रभुवर। (2)

पुण्यशालिनी तव माता और
संत-गणों की स्तुतियों के संग
तेरी स्तुति मैं करता हूँ। (2)

तू तो अमर अनश्वर है प्रभु !
देने आशीष जग में आया
मानव जग के, जीवन पावें। (2)

देह धरी कन्या मरियम से
जो थी पावन महिमा पूर्ण
बना वह मानव बिन परिवर्तन। (2)

फिर क्रूसारोहित हुआ रक्षक
अपनी मौत से कुचली हमारी
वही त्रियेक ईश, हमारे प्रभुवर। (2)

पिता एवं पवित्रात्मा संग
तू सम-कीर्तित, तू सम-आराधित
दया करे तू हम सब पर! (2)

(हे प्रभु ! जिसने तुझे जन्म दिया, वही माता मरियम और तेरे संत-गण हमारे लिए तुझसे विनय करेंगें।

हे हमारे प्रभु ! तू जो स्वर्गिक पिता का इकलौता पुत्र है, जो वचन और राजा है, जो स्वभावतः मृत्यु विहीन है, जो कृपया सभी मानवों की रक्षा के लिए आया, जिसने किसी परिवर्तन के बिना कन्या मरियम से, जो पावन, महिमान्वित एवं ईश माता है, जन्म लिया और हमारे लिये क्रूसित हुआ, तेरी हम स्तुति करेंगें।

हे हमारे मसीह प्रभु! तू जिसने अपनी मृत्यु से हमारी मृतयु कुचली है, तू जो त्रियेकीश होकर पिता एवं जीवंत पवित्र आत्मा के संग समकीर्तित हुआ और सम आराधित है, हम पर करूणा करें।)

**पु.** : हे परमेश्वर ! तू पवित्र है।

**मं.** : हे शक्तिशाली! तू पवित्र है।

हे अविनाशी! तू पवित्र है।

हमारे लिए क्रूसित प्रभु! हम पर करूणा करें॥

(यह प्रार्थना तीन बार बोले)

प्रभु करूणा कर (3)

## गीत

मं. : परमेश्वर से प्रेषित होकर
प्रेषित लोग चले अविरत हो
घूम-घूम कर अखिल जनों को
सुवार्ता सुनायी जनहितकारक
करते विश्वास जो भी इस पर
स्वर्गराज्य के अधिकारी वे
परमेश्वर से प्रेषित होकर।

*(पाठक पवित्र स्थान की उत्तरी ओर, सीढी पर खडे होकर और पश्चिम की ओर मुडकर प्रेषितों के कार्य नामक पुस्तक से या सार्वजनिक पत्र से पाठ पढ़ता है।)*

**से.** : मेरे वत्सल बन्धुओं! संत प्रेषितों के कार्यो से (संत पतरस के प्रथम सार्वजनिक पत्र से /संत यूहन्ना के द्वितीय सार्वजनिक पत्र से /संत याकूब के पत्र से /संत यहूदा के पत्र से) बारेकमोर।

मं. : प्रेषितों/प्रेषित के प्रभु की स्तुति हो, हम पर उसकी करूणा सदा रहे।

से. : (निर्दिष्ट पाठ पढ़ता है और पढ़ाई समाप्त होने पर) मेरे वत्सल बंधुओं! बारेकमोर।

## गीत

मं. : धन्य धन्य वह पौलुस प्रेषित
कथन निराला सुना है मैंने
उल्टी मेरी शिक्षा से
सीख सुनावे तुमको कोई।
चाहे वह हो स्वर्ग-दूत भी,
कलीसिया का शाप उसी पर,
अवश्य पडेगा, बिना विलंब ही।
भिन्न शिक्षायें जग में प्रचलित
ईश्वर की शिक्षा में दीक्षित
वही परम धन्य इस जग में। (2)

(पाठक, पवित्र स्थान की दक्षिणी ओर सीढी पर खडें होकर और पश्चिम की ओर मुडकर पौलुस का पत्र पढ़ता है।)

से. : मेरे बन्धुओं! इफीसियों के नाम प्रेषित पौलुस के पत्र से, बारेकमोर।

मं. : प्रेषित के प्रभु की स्तुति हो, हम पर उसकी करूणा सदा रहे।

से. : (निर्दिष्ट पाठ पढता है और पढाई समाप्त होने पर) मेरे बन्धुओं! बारेकमोर।

पु. : (रहस्य प्रार्थना) (गीत)

मं. : हाल्लेलूयाह ! हाल्लेलूयाह !
स्तुति-बलिदान चढाओं तुम,

निर्मल भेंटें ले लो तुम !
प्रभु प्रांगण में प्रविष्ट हो,
पवित्र वेदी सम्मुख तुम,
प्रभु की आराधना करो, हाल्लेलूयाह ! हाल्लेलूयाह !!

**से.** : बारेकमोर। परमेश्वर के जीवन्त वचनों की घोषणा को, जो कि हमारे प्रभु यीशु मसीह के पवित्र सुसमाचार में है, जो अब हमारे सम्मुख पढ़ा जाता है, हम शांति, विस्मय एवं शालीनता से कान लगाकर सुन लें।

(पुरोहित सुसमाचार पढ़ता है)

**पु.** : शान्ति, तुम सब को।

**मं.** : आपकी आत्मा के संग, परमेश्वर-प्रभु हमें भी योग्य बनावें।

**पु.** : दुनिया के लिए.....पवित्र सुसमाचार से।

**मं.** : धन्य है वह जो आया और आनेवाला है, उसकी स्तुति, जिसने उसे हमारी रक्षा के लिए भेजा, हम सब पर उसकी करूणा सदा रहे।

**पु.** : जिसने पवित्र कन्या.....इस प्रकार हुआ।

**मं.** : हम विश्वास करते हैं, और मानते हैं।

(पुरोहित सुसमाचार का पाठ पढता है और पढ़ाई समाप्त होने पर)

**पु.** : शांति तुम सबको।

**मं.** : आगत होते हैं जब स्वामी,
तब जाग्रत हो जो भी सेवक,
द्राक्षोद्यान में कर्म- निरत हो,
दीख पड़े हैं वे हैं धन्य।

दिन भर उनके साथी बनकर,
कर्म करेंगें उत्साही बन,
सेवा कर लेंगें वे उनकी,
कमर बांध कर आप सदा ही।

बि-ठायेंगे भोजन करने,
परम पिता वे, शुश्रुषक सुत,
शांती प्रदायक पवित्रात्मा तब,
मुकुट धरेंगें सब शीर्षों पर।
हाल्लेलूयाह - हाल्लेलूयाह।

**अथवा**

प्रभुवर ने कहा- मैं जीवन की रोटी हूँ।
स्वर्ग से आया-जग-पोषण हित
मुझ शब्द को पिता ने भेजा
गब्रीएल ने बोया शब्द बीज को

मरियम ने स्वीकारा निज उदर में
जीवन की इस रोटी को
हाथों में लेते हैं पुरोहित।
हाल्लेलूयाह-हाल्लेलूयाह।

**अथवा**

पावन आलय में, स्वीकारा
ज़करयाह का, सुगंधित धूप
हम दासों के धूपों को भी
वैसे ही प्रभु करना स्वीकार

करना क्रोध हम सब से दूर।
हाल्लेलूयाह-हाल्लेलूयाह।

**पु.** : रहस्य प्रार्थना

**से.** : सावधान होकर खडे रहो।

**मं.** : हमारे प्रभु हम पर करूणा करे।

**पु.** : हम सब प्रभु से करूणा एवं दया के लिए प्रार्थना करें।

**मं.** : हे करूणाकर प्रभु! हम पर करूणा करे और हमारी सहायता करे।

**पु.** : हे प्रभु.....स्तुति आदर एवं अराधना उचित है।
(पुरोहित लोबान चढ़ाता और शोशप्पा का आंचल फैलाता है)

**से.** : बारेकमोर। दयालु प्रभु के सम्मुख, पाप-मोचन देने वाली वेदी के सम्मुख, इन दिव्य एवं स्वर्गीय पवित्र रहस्यों के सम्मुख, और विस्मयकारी पवित्र बलिदान के सम्मुख, पूजनीय पुरोहित(परम पूजनीय महा-पुरोहित) लोबान चढाते हैं। हम सब प्रभु से दया और कृपा के लिए प्रार्थना करे।

**मं.** : हे दयालु प्रभु ! हम पर करूणा करे और हमारी सहायता करे।

**पु.** : हे परमेश्वर प्रभु.....सदा सर्वदा ही।

**मं.** : आमेन।

**पु.** : (सदरा)

**मं.** : आमेन। प्रभु आपकी सेवा को स्वीकारे और आपकी प्रार्थनाओं से हमारी सहायता करे।

**पु.** : हम परमेश्वर.....प्राप्त करे।

**मं.** : आमेन।

**पु.** : मै निर्बल एवं पापी दास कीर्तन करता हूँ।
पवित्र पिता पवित्र है।

**मं.** : आमेन।

**पु.** : पवित्र पुत्र पवित्र है।

**मं.** : आमेन।

**पु.** : जीवन्त पवित्रात्मा पवित्र है।

हमारी आत्माओं.....वह निर्मल करता है।

**मं.** : आमेन।

**से.** : बारेकमोर, दिव्य ज्ञान की ओर ध्यान लगाकर, हम सब अच्छी तरह खडे हो और पूजनीय पुरोहित(परम पूजनीय महा-पुरोहित) की प्रार्थना में, स्वर मिलाकर बोले।

**पु.** : **हम विश्वास रखते हैं सत्येक परमेश्वर पर।**

**मं.** : सर्व शक्तिमान पिता पर, जो स्वर्ग एवं पृथ्वी, दृश्य एवं अदृश्य सभी पदार्थों का सृजनहार है। (आमेन)

**और एक ही प्रभु यीशु-मसीह पर भी**, जो परमेश्वर का एकलौता पुत्र है, सर्वयुगों से पहले पिता से जनित, ज्योति से ज्योति, सत्य परमेश्वर से सत्य परमेश्वर, जनित है, पर कृत नही, साराँश में पिता के बराबर, जिसके द्वारा सब निर्मित हुए, जो हम मनुष्यों के लिए और हमारी रक्षा के लिए स्वेच्छा से स्वर्ग से उतर आया † और पवित्र आत्मा के द्वारा, ईशमाता कन्या मरियम से देहधारी हुआ और पुन्तियस पीलातूस के शासनकाल में हमारे लिए क्रूसित हुआ, † जिसने दुःख सहा, मरा और समाधि में रखा गया, और स्वेच्छा से तीसरे दिन जी उठा, † स्वर्गारोहण किया और अपने पिता के दाहिने बैठा, और जीवितों एवं मृतकों का न्याय करने अपनी बडी महिमा से फिर आने वाला है, और जिसके राज्य का अंत होगा नही। (आमेन)

मं. : **और हम विश्वास रखते है एक ही जीवन्त पवित्रात्मा पर,** जो सबका जीवन-दाता प्रभु है, पिता से निकलता है, पिता एवं पुत्र के संग आराधित तथा कीर्तित है, और जो नबियों एवं प्रेषितों द्वारा बोला। सार्वजनिक, श्लैहिक, एक, और पवित्र कलीसिया पर भी हम विश्वास रखते हैं। (आमेन)

मं. : **हम मानते है कि पाप-मोचन के लिए बपतिस्मा एक बार पर्याप्त हैं,** और मृतकों के पुनरुत्थान, और आने वाली दुनिया के नवजीवन की हम प्रतीक्षा करते हैं। आमेन।

## गीत

प्रार्थना का समय है यह,
पाप-मोचन समय है यह,
भजन कीर्तन समय है यह, (2)
प्रकट करूणा समय है यह।

स्थित हो अत्युन्नत सीढी पर,
सबसे आदृत ये पुरोहित, (महापुरोहित)
पाने वालों के हित कारक, (2)
अर्पित करते है कुर्बानी।

प्रिय भ्राताओं यह करूणा,
और दया की बेला है,
शुद्ध प्रेम से मिलने की बेला, (2)
शान्ति देने की यह बेला।

दूरस्थ और निकट जनों के,
परस्पर मेल-मिलाप की बेला,

आओ भाई!आओ सत्वर ! (2)
करूणा की बिनती कर लें।
उस प्रभुवर से, हम सब मिलकर
करूणा की अब बिनती कर ले।
हे कृपालु! कृपा करे।
हे दयालु! दया करे।
प्रार्थना सुन प्रभु हमारी।
हम सेवकों पर तू कृपा करें!
बिनती कर लें हम सब मिलकर,
बरस दया अब कमज़ोरों पर (2)
प्रभुवर! तू है श्रेष्ठ सदा ही।

**से.** : सावधान हो कर खडे रहो

**मं.** : हमारे प्रभु हम पर करूणा करे

# दूसरा भाग

## अध्याय -1

**पु.** : (शान्ति-चुम्बन के पहले की प्रार्थना)

**मं.** : आमेन।

**पु.** : शांति तुम सब को।

**मं.** : आप की आत्मा को भी।

(पुरोहित शांति देता है)

**से.** : बारेकमोर। अपने परमेश्वर-प्रभु के प्रेम से भरकर, पवित्र एवं दिव्य चुम्बन के जरिये हम एक दूसरे को शांति दे।

**मं.** : परमेश्वर पभु! हमें अपनी जिंदगी भर इस शांति के योग्य बनावे।

## गीत

हम आपस में शांति बांटे,
हम पर बरसे प्रभु की शांति,
करें हम परस्पर शांति का चुम्बन,
रक्षा करे प्रभु शांति हमारी।

प्रासाद-स्थित, हो चेलों से,
प्रभु यों बोले, उत्थान के दिन,
शांति मिले, प्रियवर, तुम सब को,
सदा-सर्वदा यह शांति विराजे।

प्रभुवर! तुम तो बोले थे,
प्यार करो तुम आपस में,
रहे वह प्रेम सदा हम में,
स्वर्ग में बढें-प्रभु की महिमा,

फैले भूतल भर में शांति,
शांति रहे मानव-मन में,
प्रसन्न रहे प्रभु हम सब पर। (2)

**अथवा**

शांति दो - (2)
शांति दो प्रभु, (2)
शांति दो - (2)
शांति दो प्रभु।

**से.** : इस पवित्र एवं दिव्य चुम्बन में भागी होकर, दयालु प्रभु के सम्मुख हम अपने सिर झुकायें।

**मं.** : हमारे प्रभु और हमारे परमेश्वर! तेरे सम्मुख, हम अपने सिर झुकातें हैं।

**पु.** : (प्रार्थना) हे प्रभु.....सदा-सर्वदा ही।

**मं.** : आमेन।

**पु.** : (प्रार्थना) हे पिता परमेश्वर.....सदा-सर्वदा ही।

**मं.** : आमेन।

**से.** : बारेकमोर। भाईयों! हम श्रद्धा, शालीनता,स्वच्छता, चारूता एवं पवित्रता से खडे हों, परमेश्वर के भय में और हार्दिक प्रेम तथा सत्य विश्वास के साथ इस भयानक एवं पवित्र कुर्बानी पर हम सब दृष्टि लगाएं, जो पूज्यनीय पुरोहित (परम पूज्यनीय महापुरोहित) के हाथों अपने सामने अर्पित की जाती है, क्योंकि विश्व प्रभु परमेश्वर को यह जीवन्त बलिदान चैन एवं शांति के साथ चढाया जाता है।

**मं.** : यह कुर्बानी, करूणा, शांति, बलि और धन्यवाद है।

## अध्याय-2

**पु.** : (पश्चिम की ओर मुडकर मंडली पर तीन बार क्रूस का चिन्ह करते हुए)

पिता परमेश्वर का प्रेम .....

**मं.** : आमेन। आपकी आत्मा के संग भी रहे।

**पु.** : (स्वर्ग की ओर हाथ उठाकर) इस समय.....वहां रहे।

**मं.** : हमारे हृदय, विचार एवं भावनाएं, अपने परमेश्वर-प्रभु के साथ है।

**पु.** : भय-भक्ति समेत हम प्रभु की स्तुति करें।

**मं.** : यह अत्यंत योग्य और उचित है। (2)

**पु.** : (रहस्य प्रार्थना)

**मं.** : पवित्र, पवित्र, पवित्र है सर्व शक्तिमान परमेश्वर प्रभु! स्वर्ग और पृथ्वी तेरी महिमा से भरी हुई है। अत्युर्ध्व लोक में होशन्ना, धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आया और आनेवाला है। अत्युर्ध्व लोक में महिमा।

**पु.** : (रोटी को आर्शीवाद देते हैं।)

**मं.** : आमेन।

**पु.** : (प्याले को आर्शीवाद देते है।)

**मं.** : आमेन।

**पु.** : (स्मरण का संदेश)

जब कभी तुम इस रहस्यों.....स्मरण करो।

**मं.** : हमारे प्रभु! हम तेरी मृत्यु का स्मरण करते हैं, तेरे पुनरूत्थान का प्रचार करते है, तेरे पुनरागमन की प्रतिक्षा करते है। तेरा अनुग्रह हम सब पर रहें।

**पु.** : (प्रार्थना)

**मं.** : सर्वशक्तिमान पिता परमेश्वर ! हम पर दया करें। परमेश्वर प्रभु ! हम तेरी स्तुति करते हैं, तेरी महिमा गाते हैं, तेरी आराधना करते हैं और तुझसे प्रार्थना करते हैं, कि महान प्रभु ! करूणा करे और हमें अनुग्रहीत करें।

**पु.** : (पवित्रात्मा के आगमन के लिए रहस्य प्रार्थना)

**से.** : बारेकमोर। मेरे प्रिय जनों। यह अवसर कितना भयानक, और यह क्षण कितना संभ्रामक है, क्योंकि जीवन्त पवित्रात्मा, स्वर्ग रूपी ऊर्ध्व लोक से महिमान्वित होकर, इस अर्पित बलिदान पर उतर आता, सेता और पवित्र करता है। नम्रता एवं भय से खड़ें हों और प्रार्थना करते रहो।

**मं.** : हम सब को शांति और चैन मिलें।

पु. : हे प्रभु मुझे उत्तर दे.....करूणा करें।

मं. : हमारे प्रभु ! हम पर करूणा करें। (3 बार बोलें)

पु. : (रोटी पर आशिष देते हुए)

मं. : आमेन।

पु. : (द्राक्षारस पर आशीष देते हुए)

मं. : आमेन।

पु. : प्रार्थना

मं. : आमेन।

# अध्याय-3

# मध्यस्थ प्रार्थनाएं

## 1

*(जिन्दा रहने वाले आध्यात्मिक पितृ-जनों के लिए निवेदन)*

से. : बारेकमोर। आज और इस जीवन काल में, जो हमारे अध्यक्ष रहकर चारों भागों में परमेश्वर की पवित्र सिया मंडलियों की चराई तथा शासन करते है, और जिन्हें परमेश्वर ने इस हेतु उठाया है, उन हमारे पत्रियर्कीस महा श्रेष्ठ आचार्य इग्नातियोस, महा श्रेष्ठ आचार्य बसेलियोस और अपने सियाधीश श्रेष्ठ आचार्य (अमुक बिशप) के लिए, और अन्य सभी सत्य विश्वासी श्रेष्ठ आचार्यों के लिए इस महान, भयानक और पवित्र क्षण, हम अपने परमेश्वर प्रभु से प्रार्थना करें।

मं. : हमारे प्रभु हम पर करूणा करें।

पु. : प्रार्थना

मं. : आमेन।

## 2

*(जिन्दा रहने वाले विश्वासियों के लिए निवेदन)*

**से.** : बारेकमोर। हे प्रभु ! हम अपने सभी विश्वासी एवं सच्चे मसीही भाईयों की याद करते हैं, जिन्होंने हम तुच्छ एवं निर्बलों से निवेदन किया है कि इस घडी और इस समय हम उनकी याद करे। सर्वशक्तिमान परमेश्वर-प्रभु! हम उन सब के लिए प्रार्थना करते है, जो विभिन्न और प्रबल परीक्षाओं में पडकर तेरे शरण में आये है। तू उनसे सत्वर भेंट करें और उन्हें बचावें। परमेश्वर से परिपालित इस पवित्र कलीसिया की सभी संतान, आपस में मेल-मिलाप से रहने के लिए, कल्याण प्राप्त करने के लिए, और सत्कर्मी होने के लिए, हम प्रभु से प्रार्थना करें।

**मं.** : हमारे प्रभु हम पर करूणा करे।

**पु.** : प्रार्थना

**मं.** : आमेन।

## 3

*(जिन्दा रहने वाले विश्वासी शासकों के लिए निवेदन)*

सेवक : बारेकमोर। हम उन सब विश्वासी और सच्चे मसीही शासकों की याद करते हैं जिन्होने चारों भागों के परमेश्वर की सिया-मंडलियों और उनके आश्रमों को हर स्थान में सुरक्षित और सुदृढ रखा है। पुरोहित-गण, विश्वासी-जन और सारी मसीही मंडली सत्कर्मी बन जाने के लिए, हम प्रभु से प्रार्थना करें।

**मं.** : हमारे प्रभु हम पर करूणा करे।

**पु.** : प्रार्थना

**मं.** : आमेन।

## 4

*(ईश माता और अन्य सिया शहीदों के लिए निवेदन)*

सेवक : बारेकमोर। जो धन्य कहलाने योग्य है, और जिसे पृथ्वी की सारी पीढियाँ महिमान्वित करें, उस निर्मल महमामयी, धन्य तथा नित्य कुंवारी ईश माता मरियम की हम याद करते है। उसके संग पवित्र नबियों, प्रेषितों, सुसमाचारकों, शहीदों और मौद्यानों की भी हम याद करते है। अपने स्वामी के अग्रदूत, बपतिस्मा दाता, धन्य संत युहन्ना की, और सेवकों में प्रमुख एवं शहीदों में प्रथम, पवित्र तथा महिमान्वित स्तिफनूस की और प्रेषित प्रमुख संत पतरस और संत पौलुस की और हमारे पिता संत थोमा की, और अन्य सभी संत पुरूषों और संत महिलाओं की भी हम याद करते है।उनकी प्रार्थनाएँ हमारे लिए एक गढ बने। हम प्रभु से प्रार्थना करे।

**मं.** : हमारे प्रभु हम पर करूणा करें ।

**पु.** : प्रार्थना

**मं.** : आमेन।

## 5

*(निद्रित आध्यात्मिक पितृ-जनों एवं गुरूजनों की स्मृति)*

**से.** : बारेकमोर। हम उनकी याद करते है जिन्होने श्लैहिक, निष्कलंक तथा एक ही विश्वास को अखण्ड रखकर हमें सौंप दिया और जो पहले ही निर्मलता से निद्रित होकर संतों के स्थान पहुंच कर विश्राम ले रहे है। हम मानते है उन तीन सार्वजनिक सिन्नडों को, जो निख्या, कॉस्टांटिनोपिल

और इफिसूस में सम्मिलित हुए थे, और जितने हमारे सिया-पिता वहाँ उपस्थित थे, जो थे धर्मिष्ठ और गुरूवर, जो थे धन्य और ईश्वर-धारी, उन सबकी हम याद करते है, खासकर प्रेषित, शहीद एवं यरूशलेम के प्रथम प्रधान आचार्य संत याकूब की, और हमारे सिया-पिताओं की, याने इग्नातियोस, क्लीमीस, दिवन्नास्योस, अत्तानास्योस, यूलियोस, बसेलियोस, ग्रिगोरियोस, दीयस्कोरोस, तिमोथियोस, पीलक्सीनोस, अन्तीमीस और ईवानियोस की और संत कूरीलोस की, जो सत्यवान एवं ज्ञान का उन्नत बुर्ज नाम से कीर्तिमान है, और जिसने स्पष्ट किया कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का मनुष्यवतार कैसे हुआ, याने शब्दरूपी परमेश्वर कैसे देह-धारी बन गया, और हमारे पात्रयर्कीस संत सेवेरियोस की, जो सिरियन मसीहियों का मुकुट कहलाता है, जो परमेश्वर की पवित्र सिया का सबसे विवेकी प्रवक्ता, खंभा और गुरूवर था, जो फूलों से भरा चरागाह भी कहलाता था और जिसने सदा सर्वदा प्रचार किया कि, मरियम निसंदेह ईश-माता है, और संत याकूब बुरदाना की, जिस ने सच्चे एवं श्लैहिक विश्वास को अखण्ड रखा, और संत अप्रेम, संत याकुब, संत इसहाक एवं संत बालाय की, और संत बरसोमा की, जो दुखियों में मुख्य था, और स्तुंभ निवासी संत सीमोन की और निर्वाचित संत अबहाय की और हमारे कलीसिया के प्रख्यापित संत ग्रिगोरियोस, संत दीवन्नासियोस और संत यल्दो मोर बसेलियोस की भी हम याद करते है। और उन सब की भी हम याद करते है, जिन्होने इनके पहले, इनके संग और इनके पश्चात इस निष्कलंक एवं एक ही विश्वास की रक्षा करके आगे पहुँचाया और हमें सौंप दिया। उनकी प्रार्थनाएँ हमारे लिए एक गढ बने, हम प्रभु से प्रार्थना करें।

**मं.** : हमारे प्रभु हम पर करूणा करें।

**पु.** : प्रार्थना

**मं.** : आमेन।

## 6

*(निद्रित विश्वासियों के लिए)*

सेवक : बारेकमोर। हे आत्माओं और सभी शरीरों के स्वामी पिता-परमेश्वर! हम अपने सभी विश्वासी मृतकों की याद करते हैं जो इस निर्मल मदबहा और गिरजे को, इस स्थान और अन्य स्थानों और भू-विभागों को छोड चले है, जो प्रेम और सत्य विश्वास में निद्रित होकर तेरे पास पहुँचकर विश्राम ले रहे हैं। जिसने उनके जीवन और आत्माओं को अपने पास रखा हे उस अपने परमेश्वर मसीह से हम विनती करें कि वह अपनी अपार दया के अनुसृत ही उन्हे अपराध क्षमा और पाप मोचन प्रदान करें। हे प्रभु! हमें और उनको अपने स्वर्ग राज्य में स्थान दे। हम उच्च स्वर में पुकारकर तीन बार हमारे प्रभु हम पर करूणा करें बोले।

मं. : हमारे प्रभु हम पर करूणा करें। (3)

पु. : प्रार्थना

मं. : हे परमेश्वर! तू उन सभी मृतकों को तसल्ली दे और निर्मल कर दे, जो सच्चे विश्वासी होकर हमसे अलग हुए है। तू उनके और हमारे दोषों को क्षमा कर दे, चाहे जान बूझकर, या अनजाने में, चाहे इच्छा से, या अनिच्छा से किये हुयें हों।

पु. : प्रार्थना

मं. : आमेन। प्रभु का नाम, वैसा ही रहता है, जैसा था और रहेगा अटल, युगों-युगों तक सदा-सर्वदा ही। आमेन।

पु. : शांति तुम सबको।

मं. : आपकी आत्मा को भी।

पु. : मेरे बन्धुओं.....

# गीत

*(परदा डाला जाता है और मडली गीत गाती है)*

आगत तेरे द्वार पर है,
करते बिनती सेवक सारे,
द्वार न रखना बंद कभी तो, (2)
हम कुछ न कुछ पाने के प्रार्थी।

निज करूणा के अनुसृत ही तू,
दंडित करना हम लोगो को,
हमे बचाना क्रोध दंड से,
आश्रय दाता है तू सबके,
करते बिनती द्वार खोल दे।

प्रभु तु है करूणा सागर,
पूरी कर दे मांग हमारी,
नित लेते है नाम तुम्हारे,
दुर्बलता सब आज मिटाकर,
बने सहायक आर्त जनों का।

उत्तम गुण-गण भूषित प्रभुवर,
बिनत हमारी वाणी सुन ले,
बरसाकर, करूणाकण हम पर, (2)
माँग हमारी पूरी कर ले।

महिमान्वित प्रभु हम दासों पर,
तेरी करूणा बरस पडे,
तेरी करूणा का वह सागर (2)
अत्यगाध और अति विस्तृत है।

कियें है मैने पाप अनेक,
उनका स्मरण, न करना तू,
सर्व गुणों से विभूषित हे प्रभु,

समता कौन करेगा जग में?
बरसाकर करूणाकण हम पर।

## अथवा

साराप स्वर्ग दूतों को तब
यशायाह ने देख लिया
हाल्लेलूयाह ओ हाल्लेलूयाह
बसकुदिशा में खडे रहे थे
षड़-पक्षों के धारी थे वे
जलती आग समान थे उज्वल
किया मुख आवत दो पंखो से

ईश्वरत्व तब दर्शित न होते
दो पंखो से ढांप लिये चरण
हाल्लेलूयाह ओ हाल्लेलूयाह
जिससे आग न जला पावे
उडते रहे वे तेरे सम्मुख
दो पक्षों पर ही निर्भर
एक दूत ने कहा उपर से

उच्च स्वर यों मुखरित था
स्वर्गिक सेना पति प्रभुवर
पावन, पावन, पावन है (2)
हाल्लेलूयाह ओ हाल्लेलूयाह
उस प्रभुवर की तेज राशि से
सारी वसुधा ओतप्रोत है
प्रभुवर हम पर करूणा कर दे (2)

# विनतियाँ

**से.** : प्रभु से हम प्रार्थना करे।

**मं.** : हमारे प्रभु हम पर करूणा करे

**से.** : भाईयों ! हम प्रभु से बिनती करे कि उसकी करूणा से चैन, शांति, अनुग्रह एवं करूणा का संदेश पाने के लिये हम योग्य बने।

**मं.** : हमारे प्रभु ! अपनी कृपा से हमें इसके लिये योग्य बनावे।

**से.** : भाईयों। हम प्रभु से सदा बिनती करें कि गिरिजाओं को चैन, आश्रमों को शांति, उन के पुरोहितों को सुरक्षा और उनकी प्रजा को सुख-समृद्धि मिले।

**मं.** : प्रभु ! तेरी करूणा से हमें चैन प्रदान करें।

**से.** : भाईयों! हम प्रभु से सदा बिनती करें कि हम सत्कर्मों से और नीतियुक्त तथा स्वच्छ एवं निर्मल कर्मों से परमेश्वर के प्रिय सच्चे मसीही जन बन जावें।

**मं.** : हमारे प्रभु। तेरी स्लीबा के द्वारा हमे बचावें।

**से.** : भाईयों! बाईं ओर स्थित लोगों से प्रभु की वाणी है, ''अभिशिप्तों ! मेरे सामने से हटो और दुष्टों और अधर्मियों को जलाने वाली अनंत आग में चले जाओ।'' मेरे प्रिय भाइयों ! प्रभु से हम बिनती करें कि इन कटु एवं मारक वचनों से हम बच जावें ।

**मं.** : हमारे प्रभु। तेरी स्लीबा के द्वारा हमें बचावें।

**से.** : भाईयों! दाहिनी ओर स्थित लोगों से प्रभु की वाणी है, मेरे पिता के धन्य लोगो! ''आओ स्वर्ग राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिए तैयार किया हुआ है।'' मेरे भाईयों ! हम प्रभु से सदा बिनती करें कि ये संतोषपूर्णवचन सुनने के हम योग्य बने।

**मं.** : हमारे प्रभु! अपनी कृपा से हमें इसके लिये योग्य बनावे।

**से.** : हमारे परमेश्वर-प्रभु! अपने अनुग्रहों से और अपनी करूणा से तू रोगियों को संपूर्ण सुख प्रदान करे, पीडितों को तसल्ली दे, बन्दियों को छुटकारा दे, दूरस्थों को पुनरागमन और समीपस्थों को सुरक्षा भी प्रदान करे। अनैक्य में पडे हुए लोगों को एकता और प्रेम, बिछडों को पुनः समागम, क्रंदन करने वालों को समाश्वास, क्षीणितों को विश्राम, निर्धनों को संपुष्टि, विधवाओं को मनोधैर्य एवं सहायता, दरीद्रों को पोषण एवं संतृप्ति एवं पापियों को पाप क्षमा प्रदान करे। तू पुरोहिताई को अच्छी उन्नति और सेवकों को निर्मलता प्रदान करें। तेरा चैन भूतल भर में रहे। तू युध्दों को समाप्ति दे, मृतकों को तसल्ली दे और हमारे ऋणों एवं पापो को मोचन प्रदान करें।

**मं.** : हमारे प्रभु! तेरी कृपा से हमें इसके योग्य बनावें।

**से.** : पुनः भाईयों! प्रभु से हम सदा बिनती करे की ईश माता कन्या मरियम का और संतों एवं विश्वासी मृतकों का सुस्मरण हो।

**मं.** : उनकी प्रार्थना हमारे लिए गढ बने। आमेन।

**से.** : हम अपने मसीह प्रभु से बिनती करे कि अपने माता पिताओं, भाई बहनों, नेताओं, गुरूजनों एवं मृतको पर, हम एक दूसरे की आत्माओं पर वह अपनी अपार करूणा एवं अनुग्रह बरसा दे। हम पुनः बिनती करते है, सबके स्वामी पिता परमेश्वर की, हम स्तुति करते हैं, उसके इकलौते पुत्र की हम वंदना करते है। उसके जीवन्त पवित्रात्मा को हम महिमान्वित करते है और अपने जीवन को सौंप कर उनसे बिनती करें कि प्रभु, तरस खावें और हमें अनुग्रहित करें।

**मं.** : उनकी प्रार्थना हमारे लिए गढ़ बनें। आमेन।

# अध्याय–4

*( परदा हटाया जाता है)*

**पु.** : (प्रार्थना)। स्वर्ग में विराजमान हमारे पिता.....

**मं.** : तेरा नाम पवित्र माना जाये। तेरा राज्य आवे। तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पू। होती है, वैसे ही पृथ्वी पर भी हों। हमारे दिन भर की रोटी आज हमें दें। हमारे अपराध क्षमा करें, जैसे हम दूसरों के अपराध क्षमा करते है। हमें परीक्षा में न डाले, वरन शैतान से हमें बचावे, क्योंकि राज्य, पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही है। आमेन।

**पु.** : प्रार्थना

**मं.** : आमेन।

**पु.** : शांति तुम सबको।

**में.** : आपकी आत्मा को भी।

**से.** : बारेकमोर। इन अर्पित पवित्र रहस्यों को अनुभव करने के पहले हम पुन। करूणाकर प्रभु के सम्मुख अपने सिर झुकावे।

**मं.** : हमारे प्रभु और परमेश्वर! तेरे सम्मुख हम सिर झुकाते हैं।

**पु.** : प्रार्थना

**मं.** : आमेन।

**पु.** : शांति तुम सबको।

**मं.** : आपकी आत्मा को भी।

**पु.** : (मंडली की ओर मुडकर तीन बार क्रुस का चिन्ह करते हुए) जो पवित्र एवं.....

**मं.** : आमेन।

**से.** : बारेकमोर। हम भय और कंपन के साथ खबरदार रहें।

**मं.** : हे प्रभु! तरस खावें और हम पर करूणा करें।

**पु.** : (थाली उपर उठाते हुए) पवित्र वस्तुएं पवित्र एवं स्वच्छ जनों को दी जाती है।.....

**मं.** : कोई भी पवित्र नहीं, अतिरिक्त एक पवित्र पिता के, एक पवित्र पुत्र के और एक पवित्रात्मा के। आमेन।

**पु.** : (प्याला उपर उठाते हुए) पिता.....

**मं.** : पिता, पुत्र एवं जीवन्त पवित्रात्मा की स्तुति हो, जो सर्वदा एक है। आमेन।

**पु.** : हमारे साथ है, पवित्र एक पिता जिसने दुनिया की रचना की।

**मं.** : आमेन।

**पु.** : हमारे साथ है, पवित्र एक पुत्र जिसने अपने पवित्र शरीर के अमूल्य पीडानुभवों द्वारा उसकी रक्षा की।

**मं.** : आमेन।

**पु.** : हमारे साथ है, जीवन्त एक पवित्रात्मा भी, जो भूत और भविष्य सबको संपूर्ण करने वाला है। महिमान्वित रहे प्रभु का पवित्र नाम, आदि से सदा सर्वदा ही।

**मं.** : आमेन।

## गीत

करना स्मरण उन पितरों का हम,
कुरबानी और बिनती में,
जिन्होंने सिखाया जग में,
हम सब हों ईश्वर की संतान,
बसाना ईश सुत! उन सब को,
अपने पावन स्वर्ग राज्य में,
रहते जहाँ धार्मिक जन है,
पाकर मन में अति आनंद
कृपा करके प्रभुवर तुम,
करना मदद हमारी तुम।

## अथवा

जिन पितरों ने जीते जी, हमें परमेश्वर की संतान बनाने के लिए सिखाया, कुरबानियों एवं बिनतियों में हमें उनका स्मरण करना चाहिए। उस अनश्वर स्वर्ग राज्य में धार्मिष्ठों एवं पुण्यात्माओं के संग परमेश्वर उन्हें तसल्ली देगा। हे प्रभु! हम पर दया करे और हमारी मदद करें।

## गीत

पाप मोचन हम तो पाएँ,
पुनरूत्थान से मसीहा के,
हम बोले विश्वास समेत,
पावन है परमेश्वर सुत,
जिस ने बचाया स्लीबा से,
जय हो जय हो, प्रभु यीशु की। (3)

पावन-पावन तू पावन,
स्मृति मानित तो जिसने की,
पावन जननि संतों की,
विश्वासी जन मृतकों की,
जय हो जय हो..... (4)

संग हमारे पावनदल में,
स्वर्गीक सेना है मौजूद,
परमेश्वर के सुत के तन के,
करती है तो जयजयकार,
जय हो जंय हो..... (4)

बलिवेदी पर प्रभुवर तेरी,
याद की जाती उनकी तो,
भाई बहनों तातजनों की,
नेता माताओं की भी,
दिन में तेरे आने के,
स्थित कर उनको दाएँ तो,
जय हो जय हो..... (2)

**अथवा**

प्रभु हम पर दया कर, क्रीस्त हम पर दया कर
क्रीस्त हमारी बिनती सुन हमारी बिनती पूरी कर

स्वर्ग पिता हे परमेश्वर, हम पर दया कर।
पुत्र मसीहा तारणहार, हम पर दया कर

पवित्र आत्मा परमेश्वर, हम पर दया कर।
त्रियेक पावन परमेश्वर हम पर दया कर।
पवित्र माता हे मरियम! हमारे लिए बिनती कर
क्रीस्त प्रभु की निर्मल माँ, हमारे लिए बिनती कर
हे धर्मपिता संत थोमा हमारे लिए बिनती कर
प्रभु ईशु के शिष्यगणों, हमारे लिए बिनती कर
हे संत पतरस, संत पौलुस, हमारे लिए बिनती कर
परुमला के संत ग्रीगोरियोस, हमारे लिए बिनती कर।
संत गीवरगीस बिनती कर, हमारे लिए बिनती कर
संत कुरियाकोस बिनती कर, हमारे लिए बिनती कर।
हे संत यूलिति बिनती कर, हमारे लिए बिनती कर,
संत बस्सेलियोस बिनती कर, हमारे लिए बिनती कर।
हे मेमना परमेश्वर का, हम पर दया कर
जग के पाप तू हर लेता, हमारे लिए बिनती कर।

## भजन

*(मरियम से विनती)*

**पु. : खडी महिमा से राजकुमारी**
**हाल्लेलूयाह, हाल्लेलूयाह।**
**मं. :** और रानी थी दाहिनी ओर
राजकुमारी! सुन ले तू,

मुक्ति प्रदान करे तव करूणा मृतकों को।
स्तुति तेरी, मृतकों को जिलाने वाला।
प्रभु! तेरी, कब्रों से उठाने वाला
स्तुति तेरे प्रेषक पिता की भी
स्तुति तेरे विमलात्मा की भी।
जो वरदान मिला तस्कर को
क्रूसारोहीत जब थे तुम
मृतकों को भी वही मिले
त्रित्व पर था जिन का विश्वास ।

## पवित्र रहस्यों को अनुभव करने के पहले की प्रार्थना

हे परमेश्वर-प्रभु! हमें तेरा पवित्र शरीर खाने और पुण्यप्रद रक्त पीने के लायक बनावे। हमारे प्रभु! हमेशा के लिए हमारे परमेश्वर! कृपा करे कि जिन्होंने तेरा हित करके तुझे प्रसन्न किया, उन सब के साथ हम भी हमेशा स्वर्ग राज्य के अधिकारी बन जाऐं।

## पवित्रा रहस्यों को अनुभव करने के बाद की प्रार्थना

हे प्रभु! हम तेरे स्वर्गीय -भोज में भाग ले सकें, अतः तेरी स्तुति करते हैं। इस कारण से कि हमनें तेरे पवित्र रहस्यों का अनुभव किये, हमें कयामत के दिन दंड से बचावे। हम तो तेरे पवित्रात्मा की सहभागिता के योग्य बन गए हैं, अतः हमें तेरे सभी सन्तों सहित अपना भाग और अधिकार मिलें। कृपा करें कि हम तेरी, तेरे इकलौते पुत्र की और सब से पवित्र तेरे पवित्रात्मा की स्तुति भी करें।

**से. : हम उच्च स्वर में पुकार कर बोले।**

**मं.** : महिमान्वित और आराध्य है पिता, पुत्र और पवित्रात्मा, आदि से पीढी-पीढियों तक, उसंकी स्तुति, हाल्लेलुयाह।
(परदा हटाया जाता है)

**पु.** : हे परमेश्वर के पुत्र.....

**मं.** : आमेन।

पु. : ऋणों के परिहार.....

मं. : आमेन।

पु. : इन पवित्र रहस्यों.....

मं. : आमेन।

## गीत

उर्ध्व लोक में प्रभु की महिमा हो
माता मरियम की प्रशंसा भी हो
प्राप्त करे शहीद महिमा मुकुट निराले
मृतकों पर तो प्रभु करूणा बरसे, हाल्लेलुयाह।

**अथवा**

हे कृपालु! कृपा करे,
हे दयालु! दया करे,
प्रार्थना सुनकर उत्तर दे,
हम सेवकों पर कृपा करें,
तेरी स्तुति हो, हाल्लेलुयाह ।

पु. : हमारे प्रभु.....अनुग्रहित भी करो।

## गीत

मं. : पृथ्वी करेगी वंदना तेरी,
सभी ज़बानें स्तुतिगान करेंगी,
तू मृतकों को जिलाने वाला,
तू है उनकी आशा सुषमा,
हाल्लेलूयाह। हाल्लेलूयाह।

# अध्याय -5

# कृतज्ञता प्रार्थना

**पु.** : हे प्रभु.....

**मं.** : आमेन।

**पु.** : शांति तुम सबको।

**मं.** : आपकी आत्मा को भी।

**से.** : इन दिये हुए पवित्र रहस्यों का अनुभव करने के बाद फिर से करूणाकर प्रभु के सम्मुख, हम अपने सिर झुकाये।

**मं.** : हमारे प्रभु और परमेश्वर! तेरे सम्मुख हम अपने सिर झुकाते हैं।

**पु.** : (प्रार्थना)

**मं.** : आमेन।

**से.** : बारेकमोर।

**मं.** : प्रसन्न होते प्रभु इस भेटों से,
पाप-मोच मिले मृतकों को भी
आहलादित हो ईरि दूत सभी,
आहलादित हो ईरि दूत सभी,

**अथवा**

पुण्यशालिनी तव माता की,
संतगणों की बिनती से भी,
क्षमा मिले हमें और मृतकों कों,
करूणा बरसे नित दासों पर।

**मु.** : प्रिय बन्धुओं.....

**मं.** : आमेन! प्रभु आपकी कुर्बानी स्वीकार करें, आपकी प्रार्थनाओं से हमारी सहायता भी करें।

(परदा डाला जाता है)

# प्रभु भोज एवं आशीष के समय के गीत

## (1)

मुक्ति दिलाये यीशु नाम, शांति दिलाये यीशु नाम (2)

1. यीशु दया का बहता सागर (2) , यीशु है दाता महान (2)
2. चरनी में तूने जन्म लिया यीशु (2), सूली पर किया विश्राम (2)
3. हम सबके पापों को मिटाने (2), यीशु हुआ बलिदान (2)
4. क्रूस पर अपना खून बहाया (2), सारा चुकाया दाम(2)
5. हम पर यीशु कृपा करना (2), हम है पापी नादान (2)

1. स्वर्गीय आशीष दे-(2)
स्वर्ग को तू खोल हाथ अपना बढा
स्वर्गीय आशीष दे।

2. पवित्र आत्मा तू दे (2)
भर दे मुझे सामर्थ से,
पवित्र आत्मा तू दे।

3. यीशु मेरे दिल में आ (2)
खोलता हूँ द्वार, करता इकरार,
यीशु मेरे दिल में आ।

4. हमको ग्रहण कर प्रभु (2)
जैसे भी हैं, हम हैं तेरे
हम को ग्रहण कर प्रभु।

अपनों को तो , इस दुनिया में, सब प्यार करते हैं,
दुश्मन को भी, प्यार करना,मसीहा सिखाते हैं।

1. इक गाल पर जो मारे चाटा, दूजा गाल भी देना
ले जाए कोई इक मील जब संग दो मील साथ चलना। 2

अपनों को तो अपना सब कुछ सब लोग देते हैं
दुश्मन को भी सब कुछ देना मसीहा सिखाते हैं।

2. जो दे तुमको काँटे उनका दामन फूलों से भर दो
यीशु ने तुमको माफ किया है तुम सबको माफ कर दो 2
अपनों को तो पापों से माफी सब लोग देते हैं।
दुश्मन को भी माफ करना मसीहा सिखाते हैं।